बच्चों के लिए एंटीवायरल दवाइयों की समस्या

मान लीजिए कि आपके बच्चे को स्वाइन फ्लू हुआ है। अब आप क्या करेंगे - उसे एंटीवायरल दवाएं देना शुरू कर देंगे या जहां तक संभव हो ऐसी दवा न देने की कोशिश करेंगे? स्वाभाविक रूप से माता-पिता इसे लेकर भ्रमित हैं। सरकार तो सुरक्षा को प्राथमिकता देती है और सलाह देती है कि फ्लू का पता लगते ही एंटीवायरल दवा - ऑसेल्टामिविर (टैमीफ्लू) या ज़ैनामिविर (रेलेंज़ा) - दे दी जाए। मगर क्या यह सर्वोत्तम रणनीति है?

हाल ही में ब्रिटिश मेडिकल जरनल में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों का उपचार टैमीफ्लू या रेलेंज़ा से करें तो बहुत प्रभावी नहीं होता है।

इस अध्ययन के प्रमुख, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के मैथ्यू थॉम्पसन कहते हैं कि ज़्यादातर बच्चों में इनका असर बहुत ही कम होता देखा गया है। ये दवाइयां बीमारी की अवधि को अधिक से अधिक एक दिन ही कम कर पाती हैं। इसके अलावा संक्रमित बच्चे द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को संक्रमित करने की आशंका में भी सिर्फ 8 प्रतिशत की ही कमी आती है।

दूसरी ओर, टैमीफ्लू के सेवन के दौरान उल्टियां सहित कुछ अन्य दूसरे प्रभाव दिखाई देते हैं। इसके अलावा, एंटीवायरल दवाइयों का अधिक उपयोग करने से वायरस में प्रतिरोधक क्षमता पनपने का खतरा बढ़ जाता है। थॉम्पसन पालकों को सलाह देते हैं कि साधारण फ्लू के लक्षण होने पर एंटीवायरल दवाइयों का इस्तेमाल न करें बल्कि उन्हे बुखार उतारने की दवाओं के साथ-साथ पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ दें और आराम करने दें। ***(स्रोत फीचर्स)***